संस्कृत भाषा का महत्व

1. संस्कृत भाषा जनमानस की भावनाओं को पवित्र करने वाली है।
2. वर्तमान समय में अखिल ब्रह्मांड में जो भी वांगमय उपलब्ध है, वह सब संस्कृत भाषा में है।
3. हम सभी के रामायण, महाभारत, इतिहासिक ग्रंथ, चारों वेद, उपनिषद, पुराण और बहुत सारे महाकाव्य नाटक आदि इसी संस्कृत भाषा में लिखे गए।
4. भाषा के विद्वानों द्वारा संस्कृत भाषा को सभी आर्य भाषाओं की जननी कहा गया है
5. संस्कृत का गौरव बहुत सारी विधाओं के ज्ञान का आश्रय और बहुत ही व्यापक है।
6. संस्कृत के गौरव में महार्षियों ने कहा है कि यह देवताओं की भाषा है।
7. संस्कृत का साहित्य सरस है और इसका व्याकरण सुनिश्चित है।
8. संस्कृत भाषा के गद्य–पद्य में लालित्य होता है अर्थात संस्कृत के गद्य–पद्य जो भी हैं वे सब सुंदर होते हैं ।
9. संस्कृत भाषा के सुनने में अद्वितीय माधुर्य है।
10. यह भाषा अपने भाव बोध को कराने में पूर्णता सक्षम है।
11. संस्कृत भाषा चरित्र निर्माण में जिस प्रकार अपना प्रभाव डालती है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं अर्थात संस्कृत भाषा के पढ़ने से, सुनने से, बोलने से, चरित्र पर प्रभाव पड़ता है। चरित्र का निर्माण होता है।
12. मानवीय मूलभूत गुणों को विकसित करने वाली यह संस्कृत भाषा की जितनी भी विवेचना की जाए कम है। इस भाषा में माननीय मूल्यों को विकसित करने की अद्‌भुत क्षमता है। दया, दान, शौच, उदारता, अनुसुइया अर्थात चोरी नहीं करना चाहिए, क्षमा और इसके अतिरिक्त अनेकों मानवीय मूल्य संस्कृत भाषा के साहित्य को पढ़ने से, समझने से, आचरण में समावेशित होते हैं।
13. यह भाषा हम सभी के लिए माता के समान है। हम सबको इस संस्कृत भाषा को माता के समान सम्मान देना चाहिए। इसकी वंदना करनी चाहिए।
14. संस्कृत भाषा के आदि कवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास और कवि कुल कालिदास जी हैं।
15. यहां पर भारत माता का स्वतंत्र गौरव, अखंडता और सांस्कृतिक एकता का जो तत्व है, वह इसी संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है।

16. संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में प्राचीन है और श्रेष्ठ है इस वजह से बहुत ही सुंदर कहा गया है – ''भाषाओं में सबसे सुंदर है, मुख्य है, इस संस्कृत भाषा के समान अन्य कोई भी भाषा नहीं है।''